सत्रीय कार्य 2021–22
(पाठ्यक्रम के सभी खंड़ों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–4
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–4/टीएमए/2021–22
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं चार की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।** 10X4=40

(क) बादलों ने सूरज की हत्या कर दी, सूरज मर गया। मैं दूसरों का बोझ ढोता हूँ। मेरे रिक्शे में आईने लगे हैं। आईने में मैं अपना मुँह देखता हूँ। सूरज नहीं रहा। अब धरती पर आईनों का शासन होगा। आईने अब उगने और न उगने वाले बीज अलग–अलग कर देंगे।

(ख) धोखा खाने वाला मूर्ख और धोखा देने वाला ठग क्यों कहलाता है? जब सब कुछ धोखा ही धोखा है, और धोखे से अलग रहना ईश्वर की भी सामर्थ्य से भी दूर है, तथा धोखे ही के कारण संसार का चर्खा पिन्न–पिन्न चला जाता है, नहीं तो ढिच्चर–ढिच्चर होने लगे, बरंच रही न जाय तो फिर इस शब्द का स्मरण वा श्रवण करते ही आप की नाक भौंह क्यों सुकुड़ जाती है?

(ग) परिचय प्रेम का प्रवर्तक है। बिना परिचय के प्रेम नहीं हो सकता। यदि देश–प्रेम के लिए हृदय में जगह करनी है तो देश के स्वरूप से परिचित और अभ्यस्त हो जाओ। बाहर निकलो तो आँखें खोलकर देखो कि खेत कैसे लहलहा रहे हैं, नाले झाड़ियों के बीच से कैसे बह रहे हैं, टेसू के फूलों से वनस्थली कैसी लाल हो रही है, चौपायों के झुंड चरते हैं, चरवाहे तान लड़ा रहे हैं, अमराइयों के बीच में गाँव झाँक रहे हैं। उनमें घुसो, देखो तो क्या हो रहा है। जो मिले उनसे दो–दो बातें करो, उनके साथ किसी पेड़ की छाया के नीचे घड़ी–आध–घड़ी बैठ जाओ और समझो कि ये सब हमारे हैं। इस प्रकार जब देश का रूप तुम्हारी आँखों में समा जायगा, तुम उसके अंग–प्रत्यंग से परिचित हो जाओगे, तब तुम्हारे अंतःकरण में इस इच्छा का उदय होगा कि वह हमसे कभी न छूटे, वह सदा हरा भरा और फला–फूला रहे, उसके धन–धान्य की वृद्धि हो, उसके सब प्राणी सुखी रहें।

(घ) पर मुझे सर्दी में अलाव जलता हुआ देखना अच्छा लगता है। लकड़ी–कण्डों का अभाव तो था ही नहीं। बस पर्णकुटी के बाहर बड़ा–सा ढेर लगाकर मैं होली जलाती और अतिथियों की गृहस्थी के साथ आई हुई एक पुरानी मचिया पर बैठकर तापती। उनके बच्चे, जो कल्पवास के कठोर नियमों से मुक्त थे और मेरी भक्तिन, जिसका कल्पवास परलोक से अधिक इस लोक से संबंध रखता था, आग के निकट बैठकर हाथ–पैर सेंकते। सच्चे कल्पवासी अपने और आग के बीच में इतना अंतर बनाए रखते थे, जितने में पाप पुण्य का लेखा–जोखा रखने वाले चित्रगुप्त महोदय धोखा खा सकें।

(ङ) संघ लेखकों के स्वत्व की रक्षा करेगा, लेकिन कैसे? कुछ सज्जनों का विचार है कि लेखक संघ उसी तरह लेखकों के हितों और अधिकारों की रक्षा करे जैसे अन्य मजूर–संघ अपने सदस्यों की रक्षा करते हैं, क्योंकि लेखक भी मजूर ही हैं, यद्यपि वह हथौड़े और बसूले से काम न करके क़लम से काम करते हैं। और लेखक मजूर है तो प्रकाशक पूँजीपति हुए। इस तरह यह संघ लेखकों को प्रकाशकों की लूट से बचाये, और यही उसका मुख्य काम हो। कुछ अन्य सज्जनों का मत है कि लेखक–संघ को पूंजी खड़ी करके एक विशाल सहकारी प्रकाशन–संस्था बनाना चाहिए, जिससे वह लेखक को उसकी मज़दूरी की ज़्यादा उजरत दे सके।

2. भारतेन्दु नाट्य लेखन को सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय जागरण का माध्यम बनाना चाहते थे? विवेचन कीजिए। 10

3. 'आधे-अधूरे' की भाषा और संवाद योजना पर प्रकाश डालिए। 10

4. ललित निबंध के रूप में 'कुटज' का परीक्षण कीजिए। 10

5. हिंदी संस्मरण लेखन की परंपरा में 'वसंत का अग्रदूत' की विशिष्टता प्रतिपादित कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियां लिखिए: 5X4=20
   (क) 'तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' का प्रतिपाद्य
   (ख) यात्रा-वृतांत की परंपरा और राहुल सांकृत्यायन
   (ग) रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच'
   (घ) हिंदी में साक्षात्कार की परंपरा